पु•ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –X

HINDI

JULY & AUGUST -MONTH

SYLLABUS

2020

Chapters:-

Ch-5-Perwat Pradesh me paavas

Ch-6-Madhur Madhur

Ch-12-Tanttara-Vamiro

Ch-13-Teesri kasam

पद्य-भाग

पाठ-5

(पर्वत प्रदेश के पावस -सुमित्रानंदन पंत)

परिचय:-सुमित्रानंदन पन्त का जीवन परिचय- सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तरांचल (वर्तमान समय में उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गांव में सन 1900 में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई। वे अपने भाई के साथ काशी आ गए और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण कर के वे इलाहाबाद चले गए। असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी भाषा के साहित्य का अध्ययन करने लगे। उनकी मृत्यु २८ दिसम्बर को हुई।

उन्होंने सात वर्ष की उम्र से ही कविता लिखना शुरु कर दिया था। उनका प्रसिद्ध काव्य-संकलन 'पल्लव' प्रकाशित हुआ। सुमित्रानंदन पंत की कुछ अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ - ग्रन्थि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा, सत्यकाम आदि हैं।

पाठ का सार:-

कवि ने इस कविता में प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है कि लग रहा है कि प्रकृति सजीव हो उठी है। कवि कहता है कि वर्षा ऋतु में प्रकृति का रूप हर पल बदल रहा है कभी वर्षा होती है तो कभी धूप निकल आती है। पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे है जैसे पर्वतों की आँखे हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतो से गिरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों,चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

***-शब्दार्थ:-**

1-गिरि - पहाड़	2-मद - मस्ती
3- झग - फेन	4-उर – हृदय
5-उच्चांकाक्षा - ऊँच्चा उठने की कामना	6-तरुवर -पेड़
7-नीरव नभ शांत - शांत आकाश	8-अनिमेष - एक टक
9-भूधर - पहाड़	10-पारद के पर- पारे के समान धवल एवं चमकीले पंख
11- रव -शेष - केवल आवाज का रह जाना	12-सभय - भय के साथ
13- शाल- एक वृक्ष का नाम	14-जलद -यान - बादल रूपी विमान
15-विचर- घूमना	16-इंद्रजाल – जादूगरी

17-मेखलाकार - करघनी के आकर की पहाड़ की ढाल

18-सहस्र - हज़ार

19-दृग -सुमन - पुष्प रूपी आँखे

20-अवलोक - देखना

21-महाकार - विशाल आकार

22-ताल - तालाब

23-दर्पण - आईना

24-पावस ऋतु - वर्षा ऋतु

25-परिवर्तित - बदलना

26-प्रकृति -वेश -- प्रकृति का रूप

***-प्रश्न-उत्तर:-**

1-मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

1-मेखलाकार का अर्थ है गोल, जैसे - कमरबंध। यहाँ इस शब्द का प्रयोग पर्वतों की श्रृंखला के लिए किया गया है। ये पावस ऋतु में दूर–दूर तक गोल आकृति में फैले हुए हैं।

2-'सहस्र दृग–सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

2-पर्वतों पर हज़ारों रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। कवि को पहाड़ों पर खिले हज़ारों फूल पहाड़ की आँखों के समान लगते हैं। ये नेत्र अपने सुंदर विशालकाय आकार को नीचे तालाब के जल रुपी दर्पण में आश्चर्यचकित हो निहार रहे हैं।

3-कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

3-कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है। जिस प्रकार दर्पण से प्रतिबिंब स्वच्छ व स्पष्ट दिखाई देता है, उसी प्रकार तालाब का जल स्वच्छ और निर्मल होता है। पर्वत अपना प्रतिबिंब दर्पण रुपी तालाब के जल में देखते हैं।

4-पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे–ऊँचे वृक्ष आकाश की और क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

4- ऊँचे-ऊँचे पर्वत पर उगे वृक्ष आकाश की ओर देखते चिंतामग्न प्रतीत हो रहे हैं। जैसे वे आसमान की ऊचाइयों को छूना चाहते हैं। इससे मानवीय भावनाओं को बताया गया है कि मनष्य सदा आगे बढ़ने का भाव अपने मन में रखता है।

5-शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?

5-आसमान में अचानक बादलों के छाने से मूसलाधार वर्षा होने लगी। वर्षा की भयानकता और धुंध से शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में धँस गए प्रतीत होते हैं।

6- झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

6- झरने पर्वतों की ऊँची चोटियों से झर-झर करते बह रहे हैं। ऐसा लगता है मानो वे पर्वतों की महानता की गौरव गाथा गा रहे हों।

भाव स्पष्ट कीजिए –

1-है टूट पड़ा भू पर अंबर।

सुमित्रानंदन पंत जी ने इस पंक्ति में पर्वत प्रदेश के मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है। पर्वत प्रदेश में पावस ऋतु में प्रकृति की छटा निराली हो जाती है। कभी-कभी इतनी धुआँधार वर्षा होती है मानो आकाश टूट पड़ेगा।

2--इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

2=-प्रस्तुत कविता में जगह-जगह पर मानवीकरण अलंकार का प्रयोग करके प्रकृति में जान डाल दी गई है जिससे प्रकृति सजीव प्रतीत हो रही है; जैसे – पर्वत पर उगे फूल को आँखों के द्वारा मानवकृत कर उसे सजीव प्राणी की तरह प्रस्तुत किया गया है।

3-"उच्चाकांक्षाओं से तरूवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर "

3-इन पंक्तियों में तरूवर के झाँकने में मानवीकरण अलंकार है, मानो कोई व्यक्ति झाँक रहा हो।

4--कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। ऐसे स्थलों को छाँटकर लिखिए

4--कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। कविता में इन स्थलों पर चित्रात्मक शैली की छटा बिखरी हुई है-

- मेखलाकार पर्वत अपार
- अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
- अवलोक रहा है बार-बार
- नीचे जल में निज महाकार
- जिसके चरणों में पला ताल
- दर्पण फैला है विशाल!

व्याकरण:- क्रिया और उसके भेद:-

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे क्रिया कहते है।

जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।1. घोड़ा जाता है।

2. पुस्तक मेज पर पड़ी है।

3. मोहन खाना खाता है।

4 राम स्कूल जाता है।

कर्म की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं -

1. अकर्मक क्रिया **2. सकर्मक क्रिया**

1. अकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया का अर्थ होता है, कर्म के बिना या कर्म रहित। जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं पडती और क्रियाओं का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। **दूसरे शब्दों में -** जिन क्रियाओं का फल और व्यापर कर्ता को मिलता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।जैसे - तैरना, कूदना, सोना, उछलना, मरना, जीना, रोना, हँसता, चलता, दौड़ता, होना, खेलना, बैठना, मरना, घटना, जागना, उछलना, कूदना आदि।

उदहारण -

(i) वह चढ़ता है।

(ii) वे हंसते हैं।

(iii) नीता खा रही है।

(iv) पक्षी उड़ रहे हैं।

(v) बच्चा रो रहा है।

2. सकर्मक क्रिया

सकर्मक का अर्थ होता है, कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

सरल शब्दों में- जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते है।

जैसे -

(i) वह चढाई चढ़ता है।

(ii) मैं खुशी से हँसता हूँ।

(iii) नीता खाना खा रही है।

(iv) बच्चे जोरों से रो रहे हैं।

पद्य-भाग

पाठ-6

(मधुर-मधुर मेरे दीपक जले)

(महादेवी वर्मा)

***-परिचय**:-दूसरों से बातें करना,दूसरों को समझाना ,दूसरों को सही रास्ता दिखाना ऐसे काम तो सब करते हैं। कोई आसानी से कर लेता है ,कोई थोड़ी कठिनाई उठा कर ,कोई थोड़ी झिझक और संकोच के बाद और कोई किसी तीसरे का सहारा ले कर करता है। लेकिन इससे कहीं ज्यादा परिश्रम का काम होता है आपने आप को समझाना। अपने आप से बात करना ,अपने आप को सही रास्ते पर बनाये रखने की कोशिश करना। अपने आपको हर परिस्थिति में ढालने के लिए तैयार रखना ,हर स्थिति में सावधान रहना और अपने आपको को चैतन्य बनाये रखना।

प्रस्तुत पाठ में कवयित्री आपने आप से जो उम्मीदें कर रही है , अगर वो उम्मीदें पूरी हो जाती हैं तो न केवल उसका , हम सभी का बहुत भला हो सकता है। क्योंकि हम शरीर से भले ही अनेक हों किन्तु प्रकृति ने हम सब को एक मनुष्य जाति के रूप में बनाया है।

पाठ सार:-

इस कविता के माध्यम से कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीपक (ईश्वर के प्रति आस्था) तू मधुरता और कोमलता से ज्ञान का रास्ता प्रकाशित करता जा। अपनी सुगंध को अर्थात अपनी अच्छाई को इस तरह फैला जैसे एक धुप या अगरबत्ती अपनी खुशबु को फैलाते हैं। तेरे प्रकाश की कोई सीमा ही न रहे और इस तरह जल की तेरे शरीर का एक - एक अणु उसमें समा कर प्रकाश को फैलाए अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि अज्ञान का अँधेरा बहुत गहरा होता है अतः इसे दूर करने के लिए तन मन दोनों निछावर करने होते हैं।

कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीप तू सब को रोमांचित करता हुआ जलता जा। इस तरह से जल कि सभी तुझसे तेरी आग के कुछ कण मांगे अर्थात सभी जिसे भी ज्ञान की जरुरत हो वो तेरे पास आये। तू उन्हें ऐसा प्रकाश दे या ऐसा ज्ञान दे कि वो कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार रहे। ज्ञान इतना होना चाहिए की सबके काम आ सके और कोई उसमे जल कर भस्म ना हो जाये। इसलिए कवयित्री कहती है कि दीपक तू कंपते हुए इस तरह जल की तेरा प्रभाव सब पर पड़े। कवयित्री कहती हैं कि आकाश में जलते हुए अनेक तारे तो हैं परन्तु उनमें दीपक की तरह प्रेम नहीं है क्योंकि उनके पास प्रकाश तो है परन्तु वे दुनिया को प्रकाशित

नहीं कर सकते। वहीँ दूसरी ओर जल से भरा सागर अपने हृदय को जलाता रहता है क्योंकि उसके पास इतना पानी होने के बावजूद भी वह पानी किसी के काम का नहीं है और बादल बिजली की सहायता से पूरी दुनिया पर बारिश करता है उसी तरह कवयित्री कहती है कि मेरे मन के दीपक तू भी अपनी नहीं दूसरों की भलाई करता जा।

पाठ व्याख्या:-

1-मधुर मधुर मेरे दीपक जल
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री मन के दीपक को जला कर दूसरों को रह दिखने की प्रेरणा दे रही है।

व्याख्या -: कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीपक (ईश्वर के प्रति आस्था) तू मधुरता और कोमलता से जलता जा और हर पल ,हर घडी ,हर दिन और युगो -युगो तक मेरे आराध्य अथवा ईश्वर का या ज्ञान का रास्ता प्रकाशित करता जा अर्थात ईश्वर में आस्था बनी रहे।

2-सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल
पुलक पुलक मेरे दीपक जल।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री अपने मन के दीपक को अनन्त रौशनी (ज्ञान) फैलाने को प्रेरित कर रही हैं।

व्याख्या -: कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीपक, तू अपनी सुगंध को अर्थात अपनी अच्छाई को इस तरह फैला जैसे एक धुप या अगरबत्ती अपनी खुशबु को फैलाते हैं। अपने स्वच्छ शरीर के सहारे अपनी कोमल मोम को इस तरह से पिघला दे कि तेरे प्रकाश की कोई सीमा ही न रहे और इस तरह जल की तेरे शरीर का एक - एक अणु उसमें समा कर प्रकाश को फैलाए अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि अज्ञान का अँधेरा बहुत गहरा होता है ।अतः इसे दूर करने के लिए तन मन दोनों निछावर करने होते हैं। कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीप तू सब को रोमांचित करता हुआ जलता जा।

3-सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व शलभ सिर धुन कहता 'मैं

हाय न जल पाया तुझमें मिल।
सिहर सिहर मेरे दीपक जल।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री दीपक को इस तरह से जलने को कहती है कि सबको बराबर प्रकाश मिले और किसी को उस प्रकाश से हानि ना हो।

व्याख्या -: कवयित्री कहती हैं कि कि मेरे मन के दीपक तू इस तरह से जल कि सभी ठण्डे , मुलायम और नए तुझसे तेरी आग के कुछ कण मांगे अर्थात सभी जिसे भी ज्ञान की जरुरत हो वो तेरे पास आये। तू उन्हें ऐसा प्रकाश दे या ऐसा ज्ञान दे कि वो कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार रहे। पतंगे पछताते हुए कहें कि वो तेरी आग में समा कर क्यों नहीं जले अर्थात सांसारिक लोग भी तेरी तरह बनना चाहें अर्थात ज्ञान इतना होना चाहिए की सबके काम आ सके और कोई उसमे जल कर भस्म ना हो जाये। इसलिए कवयित्री कहती है कि दीपक तू कंपते हुए इस तरह जल की तेरा प्रभाव सब पर पड़े अर्थात सब अपनी जरुरत और क्षमता के हिसाब से प्रकाश या ज्ञान ले सकें।

4-जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल।
विहँस विहँस मेरे दीपक जल।

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री अपने मन के दीपक को सबकी भलाई करते हुए आगे बढ़ने को कह रही हैं।

व्याख्या -: कवयित्री कहती हैं कि आकाश में जलते हुए अनेक तारे तो हैं परन्तु उनमें दीपक की तरह प्रेम नहीं है क्योंकि उनके पास प्रकाश तो है परन्तु वे दुनिया को प्रकाशित नहीं कर सकते। वहीँ दूसरी ओर जल से भरा सागर अपने हृदय को जलाता रहता है क्योंकि उसके पास इतना पानी होने के बावजूद भी वह पानी किसी के काम का नहीं है और बादल बिजली की सहायता से पूरी दुनिया पर बारिश करता है। उसी तरह कवयित्री कहती है कि मेरे मन के दीपक तू भी अपनी नहीं दूसरों की भलाई करता जा।

***-शब्दार्थ:-**

-प्रतिक्षण - हर घडी	-प्रतिपल - हर पल
-प्रियतम - आराध्य , ईश्वर	-आलोकित– प्रकाशित
-सौरभ - सुगंध	-विपुल - विस्तृत
-मृदुल - कोमल	-अपरिमित - असीमित ,अपार
-पुलक – रोमांच	-नूतन - नया
-ज्वाला कण - आग की लपट	-शलभ - पतंगा
-सिर धुन - पछताना	-सिहर – कांपना

-असंख्यक - अनेक

-स्नेहहीन - प्रेम से रहित

-उर - ह्रदय

-विद्युत - बिजली

-विहँस – भलाई

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1:- प्रस्तुत कविता में 'दीपक ' और 'प्रियतम ' किसके प्रतिक हैं ?

1:- प्रस्तुत कविता में :-'दीपक ' ईश्वर के प्रति आस्था का और 'प्रियतम ' उसके आराध्य ईश्वर का प्रतिक है।

2:- दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों ?

2:- जब दीपक निरंतर जलेगा तो उसके आराध्य अर्थात ईश्वर तक जाने का ज्ञान रूपी रास्ता हमेशा प्रकाशमान रहेगा।

3. 'विश्वशलभ-' दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है?

3-:-विश्व शलभ अर्थात् जिस प्रकार पतंगा दीये के प्रति प्रेम के कारण उसकी लौ में जलकर अपना-जीवन समाप्त कर देता है, इसी प्रकार संसार के लोग भी अपने अहंकार, मोह, लोभ, तथा विषय-विकारोंको समाप्त करके आस्था रुपी दीये की लौ के समक्ष अपना समर्पण करना चाहते हैं ताकि प्रभु को पा सके।

4:-आपकी दृष्टि में 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है – (क) पर आवृत्ति की शब्दों (ख) पर।अंक बिंब सफल

4:- इस कविता की सुंदरता दोनों पर निर्भर है। पुनरुक्ति रुप में शब्द का प्रयोग है – मधुर-मधुर, युग-युग, सिहर-सिहर, विहँस-विहँस आदि कविता को लयबद्ध बनाते हुए प्रभावी बनाने में सक्षम हैं। दूसरी ओर बिंब योजना भी सफल है। यह सर्वस्व समर्पण की भावना की ओर संकेत कर रहा है। आराध्य के प्रति प्रेम को प्रदर्शित कर रहा है।

5-: कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही है?

5:- कवयित्री अपने मन के आस्था रुपी दीपक से अपने परमात्मा रूपी प्रियतम का पथ आलोकित करना चाहती हैं।

6-: कवयित्री को आकाश में तारे स्नेहहीन से क्यों प्रतीत हो रहें हैं ?

6:- कवयित्री अपने मन के आस्था रुपी दीपक से अपने परमात्मा रूपी प्रियतम का पथ आलोकित करना चाहती हैं।

7 -: पतंगा अपने क्षोभ को किस प्रकार व्यक्त कर रहा है ?

7:- जिस प्रकार पतंगा दीये की लौ में अपना सब कुछ समाप्त करना चाहता है पर कर नहीं पाता, उसी तरह मनुष्य भी परमात्मा रूपी लौ में जलकर अपना अस्तित्व विलीन क रना चाहता है परन्तु अपने अहंकार को नहीं छोड़ पाता। इसलिए पछतावा करता है।

8 -: मधुर मधुर ,पुलक पुलक ,सिहर सिहर और विहँस विहँस कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग अलग तरह से जलने को क्यों कहा है ?स्पष्ट कीजिए।

8:- कवयित्री अपने आत्मदीपक को तरह-तरह से जलने के लिए कहती हैं मीठी, प्रेममयी, खुशी के साथ, काँपते हुए, उत्साह और प्रसन्नता से। कवयित्री ने दीपक को हर परिस्थिति का सामना करते हुए,

अपने अस्तित्व को मिटाकर ज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके आलोक फैलाने के लिए हर बार अलग-अलग तरह से जलने को कहा है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजि:--

(1)**-: दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,**

तेरे जीवन का अणु गल गल

उत्तर -: कवयित्री का मानना है की मेरे आस्था के दीपक तू जल जल कर अपने जीवन के एक - एक कण को गला दे और उस प्रकाश को सागर की भांति फैला दे। ताकि दूसरे लोग भी उसका लाभ उठा सकें।

(2)-: युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,

प्रियतम का पथ आलोकित कर।

उत्तर इन पंक्तियों में कवयित्री का यह भाव है कि आस्था रुपी दीपक प्रतिदिन, प्रतिपल जलता रहे। युगोंयुगों तक प्रकाश फैलाता रहे। अपने मन में व्याप्त अंधकार को नष्ट करता हुआ रहे और - प्रियतम रुपी ईश्वर का मार्ग प्रकाशित करता रहे अर्थात् ईश्वर में आस्था बनी रहे।

(3)-: मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन!

इस पंक्ति में समर्पण की भावना निहित है।

उत्तर :-कवयित्री का मानना है कि इस कोमल तन को मोम की भाँति घुलना होगा तभी तो प्रियतम तक पहूँचना संभव हो पाएगा। अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति के लिए कठिन साधना की आवश्यकता है। हमें प्रभु के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करना होगा।

व्याकरण:-

अव्यय की परिभाषा:-

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नही होता है उन्हें अव्यय (अ + व्यय) या अविकारी शब्द कहते है । इसे हम ऐसे भी कह सकते है- 'अव्यय' ऐसे शब्द को कहते हैं, जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नही होता।

1. **क्रिया-विशेषण:-**ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं |

   जैसे –राधा <u>धीरे</u> बोलती है |

   <u>मोहन</u> तेज चलता है |

   आप <u>भीतर</u> बैठ जायें |

   क्रिया विशेषण के भेद : रीतीवाचक क्रिया विशेषण
   स्थानवाचक क्रिया विशेषण
   कालवाचक क्रिया विशेषण
   परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

2. समुच्चय बोधक अव्यय:-

वे अव्यय शब्द, जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय या संयोजक शब्द कहते हैं |

जैसे → राम **और** मोहन विद्यालय गए |

→गीता **और** सीता खाना खा रही है |

3- संबंध बोधक अव्यय::-

वे अव्यय शब्द, जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ लगकर उसका सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्द से बताते हैं, उन्हें संबंध बोधक अव्यय कहते हैं |

जैसे → दूध के **बिना** बच्चा नहीं रह सकता |

→ गोलू दादा जी के **साथ** घूमने जाता है |

4. विस्मयादिबोधक अव्यय :-

वे अव्यय शब्द, जो आश्चर्य, विस्मय, शोक, घृणा, प्रशंसा, प्रसन्नता, भय आदि भावों का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं |

जैसे → अहा ! कितना सुन्दर दृश्य है |

→ जीते रहो ! दीर्घायु हो |

5-संबंधबोधक और क्रिया विशेषण में अंतर – जब इनका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ होता है तब वे संबंधबोधक अव्यय होते हैं और जब वे क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं तब क्रिया विशेषण होते हैं |

जैसे→(i) दिनकर से आगे पुष्कर निकल गया | (संबंधबोधक)पुष्कर दिनकर से आगे चला गया | (क्रिया विशेषण) (ii) विनय कमरे के अंदर बैठा है | (संबंधबोधक)

विनय अंदर बैठा है | (क्रिया विशेषण)

गद्य-भाग

पाठ-12

(ततारा -वमिरो कथा-लीलाधर-मंडलोई)

⁎-परिचय:-लीलाधर मंडलोईमंडलोई का जन्म भारतीय राज्य मध्यप्रदेश के छिंदवाडा जिले के गुढ़ी नामक गाँव में हुआ। मंडलोई ने भारत में बी.ए. बीएड. (अँग्रेज़ी) पत्राकारिता में स्नातक और एम॰ए॰ (हिन्दी) तक शिक्षा ग्रहण किया और इसके बाद वे लन्दन चले गये जहाँ से प्रसारण में उच्च-शिक्षा (सी.आर.टी) ग्रहण की।

मंडलोई दूरदर्शन, आकाशवाणी के महानिदेशक सहित कई राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय समितियों के साथ ही प्रसार भारती बोर्ड के सदस्य रह चुके हैं।

जो सभ्यता जितनी अधिक पुरानी होगी उतनी ही अधिक किस्से -कहानियाँ उससे जुड़ी होती है जो हमें सुनने को मिलती हैं। जो किस्से - कहानियाँ हमें सुनने को मिलती हैं जरुरी नहीं कि वो उसी तरह घटित हुई हो जिस तरह वो हमें सुनाई जा रही हों।इतना जरूर होता है कि इन किस्सों और कहानियों में कोई न कोई सीख छुपी होती है। अंदमान निकोबार द्वीपसमूह में भी बहुत तरह के किस्से - कहानियाँ मशहूर हैं। इनमें से कुछ को लीलाधर मंडलोई ने लिखा है।

⁎-सार:-प्रस्तुत पाठ 'तताँरा वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उस द्वीप पर एक -दूसरे से शत्रुता का भाव अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच चूका था। इस शत्रुता की भावना को जड़ से उखाड़ने के लिए एक जोड़े को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी जोड़े के बलिदान का वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पाठ में किया है।

प्यार सबको एक साथ लाता है और नफरत सब के बीच दूरियों को बढ़ाती है,इस बात से भला कौन इनकार कर सकता है। इसलिए जो कोई भी समाज के लिए अपने प्यार का ,अपने जीवन का बलिदान करता है ,समाज न केवल उसे याद रखता है बल्कि उसके द्वारा किये गए त्याग और बलिदान को बेकार नहीं जाने देता। यही वह कारण है जिसकी वजह से तत्कालीन समाज के सामने मिसाल कायम करने वाले इस जोड़े को आज भी इस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा से याद करते हैं|

⁎-शब्दार्थ:-

1-श्रंखला-क्रम,कड़ी	2-आदिम-प्रारंभिक
3-इभ्क्त-बंटा हुआ	4-आत्मीय-अपना
5-विलक्षण-असाधारण	6-बयार-मंद हवा
7-तंद्रा-एकाग्रता	8-विकल-बेचैन

9-संचार-उत्पन्न | 10-असंगत-अनुचित

11-सम्मोहित-मुग्ध | 12-झुन्झुलाना-चिड़ना

13-रोमांचित-पुलकित | 14-निश्चल-स्थिर

15-अफवाह-उडती खबरे | 16-उफनना-उबाल आना

17-शमन-शांत होना | 18-घोंपना-भोकना,चुभोना

***-प्रश्न-उत्तर:-**

1-तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या थी?
उत्तर- तताँरा और वामीरो के गाँव की यह रीति थी कि विवाह के लिए लड़के-लड़की का एक ही गाँव का होना जरूरी था। दूसरे गाँव के युवक के साथ संबंध असंभव था।

2-तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?
उत्तर- तताँरा की तलवार यद्यपि लकड़ी की थी, पर इसके बावजूद लोगों का मानना था कि उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा तलवार को कभी अपने से अलग होने नहीं देता था। लोग यह मानते थे कि तताँरा अपने साहसिक कारनामे इसी तलवार के कारण ही कर पाता है। उसमें बड़ी शक्ति थी।

3-निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?
उत्तर- निकोबार के लोग तताँरा को उसके साहसी और परोपकारी स्वभाव के कारण पसंद करते थे वह एक सुंदर और शक्तिशाली युवक था। वह सदा लोगों की सहायता करता रहता था। तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। वह अपने गाँव वालों की ही नहीं, समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना धर्म समझता था। सभी उसका आदर करते थे। मुसीबत की घड़ी में वह लोगों के पास तुरंत पहुँच जाता था।

4- प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?
उत्तर- प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए अस्त्र-शस्त्र चलाने संबंधी आयोजन तथा पशु पर्व किए जाते थे।

5-'तताँरा-वामीरो कथा' का संदेश स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- 'तताँरा-वामीरो कथा' एक लोकगाथा है। इसमें यह संदेश दिया गया है कि प्रेम को किसी बंधन, जड़ता तथा सीमाओं में बाँधना उचित नहीं है। यदि कोई गाँव, प्रदेश या क्षेत्र प्रेम को पनपने के लिए खुला अवसर नहीं देता तो इससे सर्वनाश होता है। धरती में भेदभाव बढ़ते हैं। पहले से बँटी हुई धरती

और अवसर नहीं देता तो इससे मानवता का क्षय होता है। भावनाएँ एक होने की बजाय खंडित होती हैं। अतः गाँव, प्रदेश या अन्य संकीर्ण नियमो को तोड़कर हमें उदारता के साथ सबको अपनाना चाहिए।

6- तताँरा और वामीरो की मृत्यु कैसे हुई? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर- पशु-पर्व के मौके पर तताँरा और वामीरो को इक्कठा देखकर वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाजें उठाने लगे। यह तताँरा के लिए अहसनीय था। वामीरो अब भी रोए जा रही थी। तताँरा भी गुस्से से भर उठा। उसे जहाँ विवाह की निषेध परंपरा पर क्षोभ था वहीं अपनी असहायता पर खीझ वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। उसे मालूम नहीं था कि क्या कदम उठाना चाहिए? अनायास उसका हाथ तलवार की मूढ़ पर जा टिका क्रोध में उसने तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रहा था। लोग सहम उठे। एक सन्नाटा-सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी तरफ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया। वह हाँफ रहा था। अचानक जहाँ एक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ो में बँटने लगी हो। एक गड़गड़ाहट-सी गूँजने लगी और लकीर की सीध में धरती फटती ही जा रही थी। द्वीप के अंतिम सिरे तक तताँरा धरती को मानो क्रोध में काटता जा रहा था। सभी व्याकुल हो उठे। लोगों ने ऐसे दृश्य की कल्पना न की थी, वे सिहर उठे। उधर वामीरो फटती हुई धरती के कनारे तताँरा का नाम पुकारते हुए दौड़ रही थी। द्वीप दो टुकड़ों में विभक्त हो चुका था। तताँरा और वामीरो द्वीप के साथ समुन्द्र में धँस गए, और उमृत्यु हो गई।

7-शाम के समय, समुद्र किनारे तताँरा की प्राकृतिक अनुभूति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- एक शाम तताँरा दिन-भर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चाहचाहाहटें शनैः शनैः क्षीण हों को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास में उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानों बहता हुआ उसकी तरफ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे। वह विकल-सा उस तरफ़ बढ़ता गया। अंततः उसकी नजर एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगो को निहारते हुए गा रही थी। यह एक शृंगार गीत था।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –

जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा।

तताँरा-वामीरो को पता लग गया था कि उनका विवाह नहीं हो सकता था। फिर भी वे मिलते रहे। एक बार पशु पर्व मे वामीरो तताँरा से मिलकर रोने लगी। इस पर उसकी माँ ने क्रोध किया और तताँरा को अपमानित किया। तताँरा को भी क्रोध आने लगा। अपने गुस्से को शान्त करने के लिए अपनी तलवार को ज़मीन में गाड़ कर खींचता चला गया। इस तरह उसने धरती को चीर कर क्रोध को शान्त किया।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –

बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।

तताँरा ने वामीरो से मिलने के लिए कहा और वह शाम के समय उसकी प्रतीक्षा भी कर रहा था। जैसे-जैसे सूरज डूब रहा था, उसको वामीरो के न आने की आशंका होने लगती। जिस प्रकार सूर्य की किरणें समुद्र की लहरों में कभी दिखती तो कभी छिप जाती थी, उसी तरह तताँरा के मन में भी उम्मीद बनती और डूबने लगती थी।

व्याकरण- वाक्य:-

- वाक्यों के सामने दिए कोष्ठक में (√ का चिन्ह लगाकर बताएँ कि वह वाक्य किस प्रकार का है

  क) निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  ख) तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया? प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  ग) वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  घ) क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम? प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  ङ) वाह! कितना सुंदर नाम है। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

  च) मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

उत्तर:- क) विधानवाचक **ख) प्रश्नवाचक**

ग) विधानवाचक **घ) प्रश्नवाचक**

ङ) विस्मयादिबोध **च) विधानवाचक**

Ô-**इस पाठ में ‘ देखना ‘ क्रिया के कई रूप आए हैं ‘ देखना ‘ के इन विभिन शब्दप्रयोगों में क्या अंतर है? वाक्यप्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।**

Ô-**उत्तर:-**

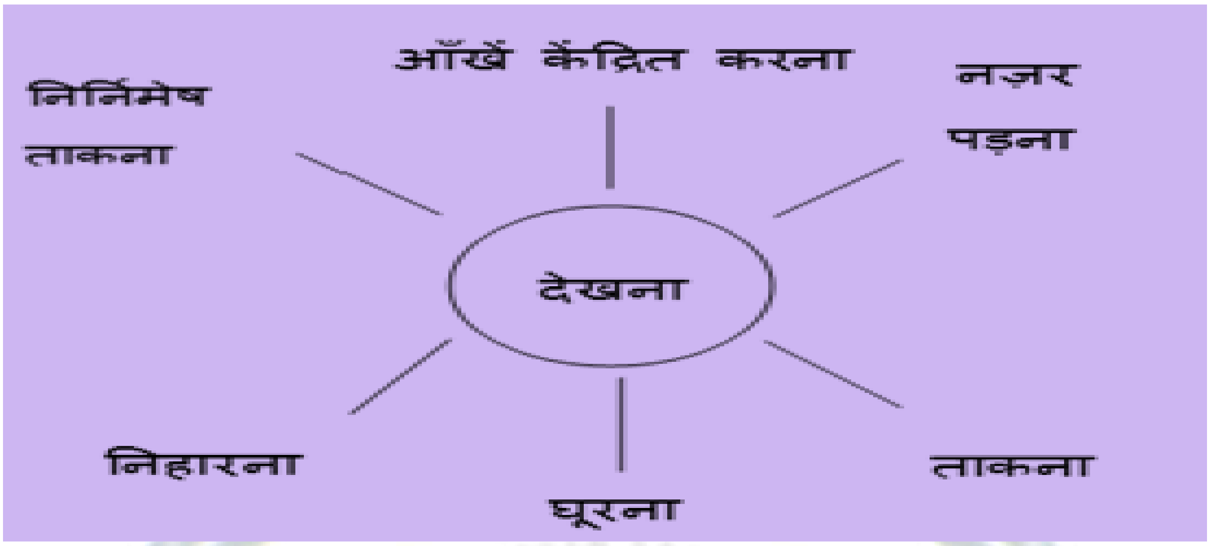
आँखें केंद्रित करना
निर्निमेष ताकना
नज़र पड़ना
देखना
निहारना
घूरना
ताकना

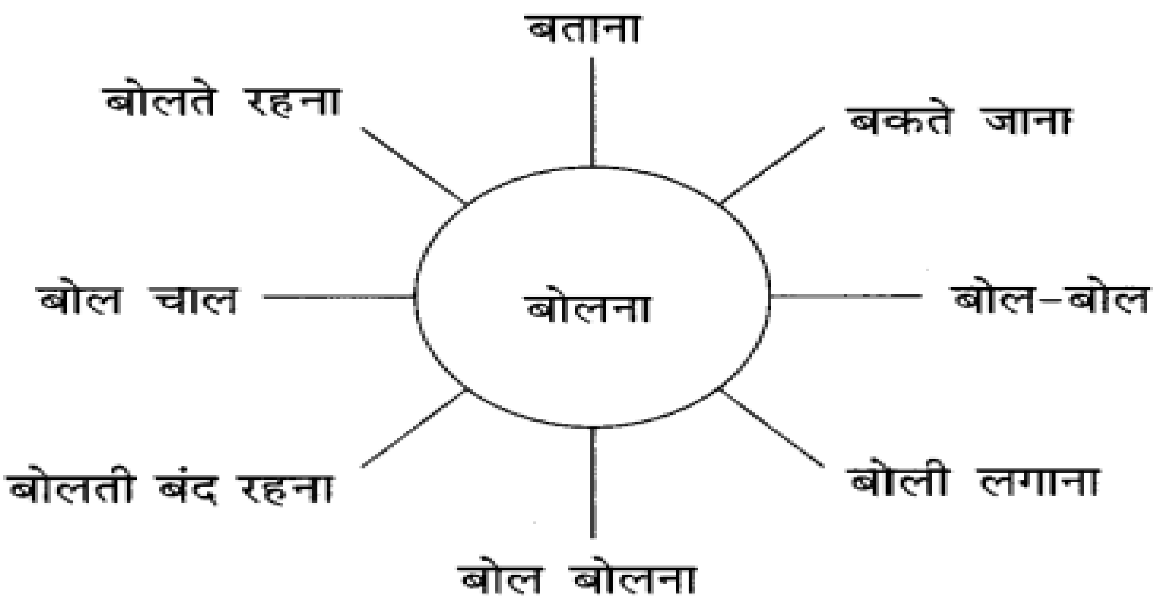
बताना
बोलते रहना
बकते जाना
बोल चाल
बोलना
बोल-बोल
बोलती बंद रहना
बोली लगाना
बोल बोलना

पद्य-भाग

पाठ-13

(तीसरी कसम)

प्रहलाद अग्रवाल

***-परिचय-सार-**

तीसरी कसम 1966 में बनी हिन्दी भाषा की नाट्य फिल्म है। फ़िल्म का निर्देशन बासु भट्टाचार्य ने और निर्माण प्रसिद्ध गीतकार शैलेन्द्र ने किया था। यह हिन्दी लेखक फणीश्वर नाथ "रेणु" की प्रसिद्ध कहानी मारे गए गुलफ़ाम पर आधारित है। इस फिल्म के मुख्य कलाकारों में राज कपूर और वहीदा रहमान शामिल हैं। बासु भट्टाचार्य द्वारा निर्देशित तीसरी कसम एक फिल्म गैर-परंपरागत है जो भारत की देहाती दुनिया और वहां के लोगों की सादगी को दिखाती है। यह पूरी फिल्म मध्यप्रदेश के बीना एवं ललितपुर के पास खिमलासा में फिल्मांकित की गई। इस फ़िल्म की असफलता के बाद शैलेन्द्र काफी निराश हो गए थे और उनका अगले ही साल निधन हो गया था।

यह हिन्दी के महान कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'मारे गये गुलफाम' पर आधारित है। इस फिल्म का फिल्मांकन सुब्रत मित्र ने किया है। पटकथा नबेन्दु घोष की है, जबकि संवाद स्वयं फणीश्वर नाथ "रेणु" ने लिखे हैं। फिल्म के गीत शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी ने लिखें, जबकि फिल्म का संगीत शंकर-जयकिशन की जोड़ी ने दिया है। यह फ़िल्म उस समय व्यावसायिक रूप से सफ़ल नहीं रही थी, पर इसे आज अदाकारों के श्रेष्ठतम अभिनय तथा प्रवीण निर्देशन के लिए जाना जाता है। इस फ़िल्म के बॉक्स ऑफ़िस पर पिटने के कारण निर्माता गीतकार शैलेन्द्र का निधन हो गया था। इसको तत्काल बॉक्स ऑफ़िस पर सफलता नहीं मिली थी पर यह हिन्दी के श्रेष्ठतम फ़िल्मों में गिनी जाती है।

हीरामन एक गाड़ीवान है। फ़िल्म की शुरुआत एक ऐसे दृश्य के साथ होती है जिसमें वो अपना बैलगाड़ी को हाँक रहा है और बहुत खुश है। उसकी गाड़ी में सर्कस कंपनी में काम करने वाली हीराबाई बैठी है। हीरामन कई कहानियां सुनाते और लीक से अलग ले जाकर हीराबाई को कई लोकगीत सुनाते हुए सर्कस के आयोजन स्थल तक हीराबाई को पहुँचा देता है। इस बीच उसे अपने पुराने दिन याद आते हैं और लोककथाओं और लोकगीत से भरा यह अंश फिल्म के आधे से अधिक भाग में है। इस फ़िल्म का संगीत शंकर जयकिशन ने दिया था। हीरामन अपने पुराने दिनों को याद करता है जिसमें एक बार नेपाल की सीमा के पार तस्करी करने के कारण उसे अपने बैलों को छुड़ा कर भगाना पड़ता है। इसके बाद उसने कसम खाई कि अब से "चोरबजारी" का सामान कभी अपनी गाड़ी पर नहीं लादेगा। उसके बाद एक बार बांस की लदनी से परेशान होकर उसने प्रण लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए वो बांस की लदनी अपनी गाड़ी पर नहीं लादेगा। हीराबाई नायक हीरामन की सादगी से इतनी प्रभावित होती है कि वो मन ही मन उससे प्रीति कर बैठती है उसके साथ मेले तक आने का 30 घंटे का सफर कैसे पूरा हो जाता है उसे पता ही नहीं चलता हीराबाई हीरामन को उसके नृत्य का कार्यक्रम देखने के लिए पास देती है जहां हीरामन अपने दोस्तों के साथ पहुंचता है लेकिन वहां उपस्थित लोगों द्वारा हीराबाई के लिए अपशब्द कहे जाने से उसे बड़ा गुस्सा आता है। वो उनसे झगड़ा कर बैठता है

और हीराबाई से कहता है कि वो ये नौटंकी का काम छोड़ दे। उसके ऐसा करने पर हीराबाई पहले तो गुस्सा करती है लेकिन हीरामन के मन में उसके लिए प्रेम और सम्मान देख कर वो उसके और करीब आ जाती है। इसी बीच गांव का जमींदार हीराबाई को बुरी नजर से देखते हुए उसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास करता है और उसे पैसे का लालच भी देता है। नौटंकी कंपनी के लोग और हीराबाई के रिश्तेदार उसे समझाते हैं कि वो हीरामन का ख्याल अपने दिमाग से निकाल दे नहीं जमींदार उसकी हत्या भी करवा सकता है और यही सोच कर हीराबाई गांव छोड़ कर हीरामन से अलग हो जाती है । फिल्म के आखिरी हिस्से में रेलवे स्टेशन का दृश्य है जहां हीराबाई हीरामन के प्रति अपने प्रेम को अपने आंसुओं में छुपाती हुई उसके पैसे उसे लौटा देती है जो हीरामन ने मेले में खो जाने के भय से उसे दिए थे।उसके चले जाने के बाद हीरामन वापस अपनी गाड़ी में आकर बैठता है और जैसे ही बैलों को हांकने की कोशिश करता है तो उसे हीराबाई के शब्द याद आते हैं "मारो नहीं"और वह फिर उसे याद कर मायूस हो जाता है।

अन्त में हीराबाई के चले जाने और उसके मन में हीराबाई के लिए उपजी भावना के प्रति हीराबाई के बेमतलब रहकर विदा लेने के बाद उदास मन से वो अपने बैलों को झिड़की देते हुए तीसरी क़सम खाता है कि अपनी गाड़ी में वो कभी किसी नाचने वाली को नहीं ले जाएगा। इसके साथ ही फ़िल्म खत्म हो जाती है।

(क) **फ़िल्मकार प्रायः अपनी फ़िल्मों में उथली चीज़ें इसलिए देते हैं क्योंकि ये चीज़ें सहज और सरल तरीके से समझ में आ जाती हैं और दर्शक वाह! वाह! कह उठते हैं। अक्सर फ़िल्मकार की नज़र मुनाफ़े पर रहती है और यही सोचते है कि किस फ़िल्म से कितना मुनाफ़ा होगा, ऐसी ही फ़िल्म बनाई जाए जो खूब चले।**

(ख) **कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। सही कथानक और सही संवाद व गाने हों। मन को गुद्‌गुदाने वाली कोई भी चीज़ न हों। कहानी को सही ढंग से प्रस्तुत किया जाए। सही दृश्य हों जो कहानी का वास्तविक रूप दर्शाते हों। अभिनय को कहानी के अनुसार होना चाहिए। फालतु की उछल-कूद या मारपीट, लड़ाई-झगड़ा न हो । दर्शकों का भावनात्मक शोषण न किया जाए। जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करें।**

(ग) **शैलेंद्र में एक सच्चा कवि-हृदय भी था। इसलिए उन्होंने भावनाप्रद गीत लिखे हैं जो बहुत सरल हैं, कठिन नहीं। दर्शकों को आसानी से समझ में आ जाते हैं। उनमें संवेदनशीलता बहुत थी। उन्हें अपार संपत्ति और यश की इतनी कामना नहीं थी, जितनी आत्मसंतुष्टि के सुख की थी। उनके गीत शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए थे। इसीलिए यह गीत सुनकर कहा गया है कि यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे जो इस प्रकार है—"मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी"**

(घ) **अपनी फ़िल्म के द्‌वारा शैलेंद्र ने यह सिद्‌ध करने का प्रयास किया है कि एक फ़िल्मकार को झूठे अभिजात्य का कभी पालन नहीं करना चाहिए और न ही दर्शकों की रूचियों की आड़ में उथलेपन को परोसना चाहिए। हर साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय करना चाहिए।**

*-शब्दार्थ:-

1-अंतराल-के बाद	2-अभिनित-अभिनय क्या हुआ
3-सर्वोत्कृष्ट-सबसे अच्छा	4-सार्थकता-सफलता के साथ
5-कलात्मकता-कला के साथ	6-संवेदनशील-भावुकता
7-शिद्दत-तीव्रता	8-अनन्य-परम
9-तन्मयता-तल्लीनता	10-पारिश्रमिक-मेहनताना
11-याराना मस्ती-दोस्ताना अंदाजा	12-आगाह-सचेत
13-बमुश्किल-बहुत कठिनाई से	14-नामजद-विख्यात
15-नावाकिफ-अनजान	16-इकरार-सहमति
17-मंतव्य-इच्छा	18-उथलापन-सतही
19-अभिजात्य-परिष्कृत	20-दुरूह-कठिन

*-प्रश्न-उत्तर :-

1-'तीसरी कसम' फ़िल्म को कौनॆकौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ह-?

1-तीसरी कसम' फ़िल्म भारत तथा विदेशों में भी सम्मानित हुई। इस फिल्म को राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक मिला तथा बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा यह सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म चुनी गई। फ़िल्म फेस्टिवल में भी इसे पुरस्कार मिला।

2-शैलेंद्र ने कितनी फ़िल्में बनाईं?

2-शैलेन्द्र ने मात्र एक फ़िल्म 'तीसरी कसम' बनाई।

3-राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फ़िल्मों के नाम बताइए।

3-राजकपूर ने संगम, मेरा नाम जोकर, बॉबी, श्री 420, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् इत्यादि फ़िल्में निर्देशित की।

4-'तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फ़िल्म में इन्होंने किन पात्रों का अभिनय किया है?

4-इस फ़िल्म में राजकपूर ने 'हीरामन' और वहीदा रहमान ने 'हीराबाई' की भूमिका निभाई है।

5-फ़िल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण किसने किया था?

5-'तीसरी कसम' फ़िल्म का निर्माण 'शैलेन्द्र' ने किया था?

6-राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?

6-राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' बनाते समय यह सोचा भी नहीं था कि इस फ़िल्म का एक ही भाग बनाने में छह वर्षों का समय लग जाएगा।

7-राजकपूर की किस बात पर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया?

7-तीसरी कसम की कहानी सुनने के बाद जब राजकपूर ने गम्भीरता से मेहनताना माँगा तो शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया क्योंकि उन्हें ऐसी उम्मीद न थी।

8-फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे?

8-फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को उत्कृष्ट और आँखों से बात करने वाला कलाकार मानते थे।

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर लिखिए –

1-'तीसरी कसम' फ़िल्म को सेल्यूलाइड पर लिखी कविता क्यों कहा गया है?

1-तीसरी कसम फ़िल्म की कथा फणीश्वरनाथ रेणु की लिखी साहित्यिक रचना है। सेल्यूलाइड का अर्थ है- 'कैमरे की रील'। यह फ़िल्म भी कविता के समान भावुकता, संवेदना, मार्मिकता से भरी हुई कैमरे की रील पर उतरी हुई फ़िल्म है। इसलिए इसे सेल्यूलाइड पर लिखी कविता (रील पर उतरी हुई फ़िल्म) कहा गया है।

2-'तीसरी कसम' फ़िल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?

'2-तीसरी कसम' फ़िल्म को खरीददार नहीं मिल सके क्योंकि फ़िल्मकारों को इस फ़िल्म से लाभ मिलने की उम्मीद बहुत कम थी। अतः उसे खरीदकर वह नुकसान नहीं उठाना चाहते थे।

3-शैलेन्द्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है?

3-शैलेन्द्र के अनुसार कलाकार का उद्देश्य दर्शकों की रूचि की आड़ में उथलेपन को थोपना नहीं बल्कि उनका परिष्कार करना होना चाहिए। कलाकार का दायित्व स्वस्थ एवं सुंदर समाज की रचना करना है, विकृत मानसिकता को बढ़ावा देना नहीं है।

4-फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है।

4-फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों को इतना ग्लोरिफ़ाई कर दिया जाता है जिससे कि दर्शकों का भावनात्मक शोषण किया जा सके। उनका उद्देश्य केवल टिकट-विंडो पर ज़्यादा से ज़्यादा टिकटें बिकवाना और अधिक से अधिक पैसा कमाना होता है। इसलिए दुख को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं जो वास्तव में सच नहीं होता है। दर्शक उसे पूरा सत्य मान लेते हैं। इसलिए वे त्रासद स्थितियों को ग्लोरिफ़ाई करते हैं।

5- 'शैलेन्द्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' – इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

5-राजकपूर अभिनय में मंझे हुए कलाकार थे और शैलेन्द्र एक अच्छे गीतकार। राजकपूर की छिपी हुई भावनाओं को शैलेन्द्र ने शब्द दिए। राजकूपर भावनाओं को आँखों के माध्यम से व्यक्त कर देते थे और शैलेंद्र उन भावनाओं को अपने गीतों से तथा संवाद से पूर्ण कर दिया करते थे।

6-लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं?

6-शोमैन का अर्थ है- ऐसा व्यक्ति जो अपनी कला के प्रदर्शन से ज़्यादा से ज़्यादा जन समुदाय इकट्ठा कर सके। वह दर्शकों को अंत तक बाँधे रखता है तभी वह सफल होता है। राजकपूर भी महान कलाकार थे। जिस पात्र की भूमिका निभाते थे उसी में समा जाते थे। इसलिए उनका अभिनय सजीव लगता था। उन्होंने कला को ऊँचाइयों तक पहुँचाया था।

7-फ़िल्म 'श्री 420' के गीत 'रातों दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

7-'रातों दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन को आपत्ति थी क्योंकि सामान्यत: दिशाएँ चार होती हैं। वे चार दिशाएँ शब्द का प्रयोग करना चाहते थे लेकिन शैलेन्द्र तैयार नहीं हुए। वे दर्शकों के सामने उथलेपन को परोसना नहीं चाहते थे। वे तो दर्शकों की रूचि को परिष्कृत करना चाहते थे।

8-राजकपूर द्वारा फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेन्द्र ने यह फ़िल्म क्यों बनाई?

8-शैलेन्द्र एक कवि थे। उन्हें फणीश्वरनाथ रेणु की मूल कथा की संवेदना गहरे तक छू गई थी। उन्हें फ़िल्म व्यवसाय और निर्माता के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं था। फिर भी उन्होंने इस कथावस्तु को लेकर फ़िल्म बनाने का निश्चय किया। उन्हें धन का लालच नहीं था। राजकपूर द्वारा फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी अपनी आत्मसंतुष्टि के लिए उन्होंने यह फ़िल्म बनाई थी।

9- 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया। स्पष्ट कीजिए।

9-राजकपूर अभिनय में प्रवीण थे। वे पात्र को अपने ऊपर हावी नही होने देते थे बल्कि उसको जीवंत कर देते थे। 'तीसरी कसम' में भी हीरामन पर राजकपूर हावी नही था बल्कि राजकपूर ने हीरामन को आत्मा दे दी थी। उसका उकड़ू बैठना, नौटंकी की बाई में अपनापन खोजना, गीतगाता गाडीवान, सरल देहाती मासूमियत को चरम सीमा तक ले जाते हैं। इस तरह उनका महिमामय व्यक्तित्व हीरामन की आत्मा में उतर गया

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

1-लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

1-तीसरी कसम फ़िल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। शैलेंद्र ने पात्रों के व्यक्तित्व, प्रसंग, घटनाओं में कहीं कोई परिवर्तन नहीं किया है। कहानी में दी गई छोटी-छोटी बारीकियाँ, छोटी-छोटी बातें फ़िल्म में पूरी तरह उतर कर आईं हैं। शैलेंद्र ने धन कमाने के लिए फ़िल्म नहीं बनाई थी। उनका उद्देश्य एक सुंदर कृति बनाना था। उन्होंने मूल कहानी को यथा रूप में प्रस्तुत किया है। उनके योगदान से एक सुंदर फ़िल्म तीसरी कसम के रूप में हमारे सामने आई है। लेखक ने इसलिए कहा है कि तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत का न्याय किया है।

2-शैलेन्द्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं। अपने शब्दों में लिखिए।

2-शैलेन्द्र के गीत भावपूर्ण थे। उन्होंने धन कमाने की लालसा में गीत कभी नहीं लिखे। उनके गीतों की विशेषता थी कि उनमें घटियापन या सस्तापन नहीं था। उनके द्वारा रचित गीत उनके दिल की गहराइयों से निकले हुए थे। अतः वे दिल को छू लेने वाले गीत थे। यही कारण है कि उनके लिखे गीत अत्यन्त लोकप्रिय भी हुए। उनके गीतों में करूणा, संवेदना आदि भाव बिखरे हुए थे।

3-फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेन्द्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

3-शैलेन्द्र की पहली और आखिरी फ़िल्म 'तीसरी कसम' थी। उनकी फ़िल्म यश और धन की इच्छा से नही बनाई गई थी। वह महान रचना थी। हीरामन व हीराबाई के माध्यम से प्रेम की महानता को बताने के लिए उन्हें शब्दों की आवश्यकता नहीं पड़ी। उन्होंने हावभाव से ही सारी बात कह डाली। बेशक इस फ़िल्म को खरीददार नही मिले पर शैलेन्द्र को अपनी पहचान और फ़िल्म को अनेकों पुरस्कार मिले और लोगो ने इसे सराहा भी।

4-शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में झलकती है–कैसे? स्पष्ट कीजिए।

4-शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में झलकती है। शैलेन्द्र ने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। उनके गीत भाव-प्रवण थे – दुरुह नहीं। उनका कहना था कि कलाकार का यह कर्त्तव्य है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। उनके लिखे गए गीतों में बनावटीपन नहीं था। उनके गीतों में शांत नदी का प्रवाह भी था और गीतों का भाव समुद्र की तरह गहरा था। यही विशेषता उनकी ज़िंदगी की थी और यही उन्होंने अपनी फिल्म के द्वारा भी साबित किया।

5-लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

5-लेखक के अनुसार 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था। लेखक का यह कथन बिलकुल सही है क्योंकि इस फिल्म की कलात्मकता काबिल-ए-तारीफ़ है। शैलेन्द्र एक संवेदनशील तथा भाव-प्रवण कवि थे और उनकी संवेदनशीलता इस फ़िल्म में स्पष्ट रुप से मौजूद है। यह संवेदनशीलता किसी साधारण फ़िल्म निर्माता में नहीं देखी जा सकती।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

1-..... वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

1-इन पंक्तियों में लेखक का आशय है कि शैलेन्द्र एक ऐसे कवि थे जो जीवन में आदर्शों और भावनाओं को सर्वोपरि मानते थे। जब उन्होंने भावनाओं, संवेदनाओं व साहित्य की विधाओं के आधार पर 'तीसरी कसम' फ़िल्म का निर्माण किया तो उनका उद्देश्य केवल आत्मसंतुष्टि था न कि धन कमाना।

2-उनका यह दृढ़ मतंव्य था कि दर्शकों की रूचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्त्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रूचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

2-फ़िल्म 'श्री 420' के एक गाने में शैलेंद्र ने दसों दिशाओं शब्द का प्रयोग किया तो संगीतकार जयकिशन ने उन्हें कहा कि दसों दिशाओं नहीं चारों दिशाओं होना चाहिए। लेकिन शैलेन्द्र का कहना था कि फ़िल्म निर्माताओं को चाहिए कि दर्शकों की रूचि को परिष्कृत करें। उथलापन उन पर थोपना नहीं चाहिए।

3-व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।

3-इसमें शैलेन्द्र ने बताया है कि दुख मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जब मुश्किल आती है तो वह उससे छुटकारा पाने की बात सोचने लगता है। अर्थात वह जीवन में हार नहीं मानता है।

4-दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।

4-धन या लाभ के लालच में जो खरीददार फ़िल्म खरीदते हैं यह फ़िल्म उनके लिए नहीं है। इस फ़िल्म की संवेदनशीलता, उसकी भावना को वे समझ नहीं सकते थे क्योंकि इसमें कोई सस्ता लुभावना मसाला नहीं था।

5-उनके गीत भाव-प्रवण थे – दुरूह नहीं।

5-शैलेन्द्र के गीत सीधी-साधी भाषा में लिखे गए थे तथा सरसता व प्रवाह लिए हुए थे। इनके गीत भावनात्मक गहन विचारों वाले तथा संवेदनशील थे।

पाठ में आए निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाइए –

चेहरा मुरझाना, चक्कर खा जाना, दो से चार बनाना, आँखों से बोलना

चेहरा मुरझाना – अपना परीक्षा-परिणाम सुनते ही उसका चेहरा मुरझा गया।

चक्कर खा जाना – बहुत तेज़ धूप में घूमने के कारण वह चक्कर खाकर गिर गया।

दो से चार बनाना – धन के लोभी हर समय दो से चार बनाने में लगे रहते हैं।

आँखों से बोलना – उसकी आँखें बहुत सुन्दर हैं। लगता है वह आँखों से बोलती है |

निम्नलिखित वाक्यों में काले पदों का परिचय दीजिए-

१) लालकिला **यमुना के** तट पर है।
उतर – संबंध कारक
२) यह कुर्सी बहुत **छोटी** है।
उतर – गुणवाचक विशेषण
३) **वाह** ! कितने सुंदर फूल है।
उतर – विस्मयादिबोधक (आश्चर्य)
४) नीरजा **ने** छत पर बैठकर पूजा की।
उतर – कर्ता कारक
५) मैं **और** रमेश दोनों मेला देखने जाएंगे।
उतर – समानाधिकरण समुच्चयबोधक
६) धीरे – धीरे **आकाश** में बादल छ गए।
उतर – जातिवाचक संज्ञा
७) ताजमहल एक **सुंदर** भवन है।
उतर – गुणवाचक विशेषण
८) **इस** संसार में सत्य की सदा जय होती है।
उतर – निश्चयवाचक सर्वनाम
९) **धीरे -धीरे** कुछ लोग हमारी तरफ **आ गए**।
उतर – रीतिवाचक क्रियाविशेषण , संयुक्त क्रिया